अनुबोधन, खण्ड 2, अंक 1, मार्च 2026, पृष्ठ 38–46
ISSN: 3049-4184 (प्रिन्ट), 3108-1185 (ऑनलाइन)
https://doi.org/10.65885/anubodhan.v2n1.2026.005

नाथ संप्रदाय के गोरक्षपीठ का राष्ट्रवादी विमर्श : 19वीं और 20वीं शताब्दी का विश्लेषण

गौरव प्रताप राव[1] और प्रियांशु सिंह[2]

प्राप्तिः 2 मार्च 2026 / संशोधितः 24 मार्च 2026 / स्वीकृतः 24 मार्च 2026 / प्रकाशितः 31 मार्च 2026, जर्नल वेबसाइटः https://anubodhan.org

सारांश

भारत में राष्ट्रवाद का विकास केवल राजनीतिक घटनाओं का परिणाम नहीं था, बल्कि यह सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं से भी गहराई से प्रभावित था। इस शोध-पत्र में नाथ संप्रदाय, विशेषकर गोरखपीठ, गोरखपुर की राष्ट्रवादी भूमिका का विश्लेषण किया गया है। ऐतिहासिक दृष्टि से गोरखनाथ और उनके अनुयायियों ने मध्यकालीन समाज में जाति विरोधी और जनकेंद्रित विचार प्रस्तुत किए, जिसने आगे चलकर आधुनिक राष्ट्रवाद की पृष्ठभूमि तैयार की। उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में गोरखपीठ के महंत दिग्विजयनाथ और महंत अवेद्यनाथ ने धार्मिक मंचों को राजनीतिक संघर्ष से जोड़ा। दिग्विजयनाथ ने स्वतंत्रता संग्राम और हिंदू महासभा में सक्रिय भागीदारी की, जबकि अवेद्यनाथ ने स्वतंत्रता-उपरांत काल में शिक्षा, स्वास्थ्य और समाजसेवा के माध्यम से राष्ट्रवादी विमर्श को आगे बढ़ाया। गोरखपीठ, गोरखपुर का राष्ट्रवाद केवल राजनीतिक सक्रियता तक सीमित नहीं था; इसमें सामाजिक समरसता, शिक्षा का प्रसार और सांस्कृतिक पुनरुत्थान भी सम्मिलित थे। गोरखपुर की रामलीला और अन्य धार्मिक-सांस्कृतिक आयोजनों को जनजागरण और राजनीतिक चेतना का माध्यम बनाया गया। तुलनात्मक दृष्टि से गोरखपीठ, गोरखपुर का राष्ट्रवाद आर्य समाज और रामकृष्ण मिशन जैसे अन्य धार्मिक आंदोलनों से भिन्न था, क्योंकि इसमें धार्मिक नेतृत्व सीधे राजनीतिक मंच पर सक्रिय हुआ। यह शोध यह स्पष्ट करता है कि गोरखपीठ, गोरखपुर ने राष्ट्रवाद को केवल सत्ता

[1]शोध छात्र, समाजशास्त्र विभाग, [2]शोध छात्र, राजनीतिशास्त्र विभाग,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, ई-मेल: gauravprao9450@gmail.com

संघर्ष न रखकर एक व्यापक सामाजिक-सांस्कृतिक परियोजना के रूप में प्रस्तुत किया। इस प्रकार, गोरखपीठ, गोरखपुर भारतीय राष्ट्रवाद की बहुआयामी संरचना को समझने में अनिवार्य कड़ी है।

मुख्य शब्द: नाथ संप्रदाय, गोरखपीठ, महंत दिग्विजयनाथ, महंत अवेद्यनाथ, राष्ट्रवाद, सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, हिंदू महासभा

प्रस्तावना

भारत में राष्ट्रवाद का उदय केवल राजनीतिक घटनाओं का परिणाम नहीं था, बल्कि यह एक गहन सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक प्रक्रिया से भी निर्मित हुआ है। उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी का भारतीय समाज उपनिवेशवादी सत्ता के दबाव, सामाजिक असमानताओं और सांस्कृतिक संकटों से जूझ रहा था। ऐसे समय में धार्मिक संप्रदायों, मठों और संत परंपराओं ने राष्ट्रवादी चेतना को बल प्रदान किया। इनमें गोरखपीठ, गोरखपुर एक महत्वपूर्ण परंपरा के रूप में उभरता है, जिसने न केवल आध्यात्मिक जीवन को दिशा दी, बल्कि राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्र में भी सक्रिय भूमिका निभाई।

नाथ संप्रदाय का उद्भव मध्यकालीन भारत में गोरखनाथ जैसे योगियों से जुड़ा हुआ है, जिन्होंने योग और हठयोग की परंपरा को व्यवस्थित किया। यह परंपरा उत्तर भारत, विशेषकर गोरखपुर क्षेत्र में, सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन का केंद्र बनी। गोरखपीठ से जुड़े महंतों ने समय-समय पर समाज सुधार, शिक्षा प्रसार और धार्मिक चेतना के साथ-साथ राजनीतिक गतिविधियों में भी भागीदारी निभाई। यही कारण है कि जब भारत में आधुनिक राष्ट्रवाद का स्वर उभर रहा था, तब नाथ संप्रदाय और उसके प्रमुख संस्थान गोरखपीठ ने उस विमर्श को एक विशिष्ट स्वरूप दिया। (सारथी, 2017)

भारत में राष्ट्रवाद के इतिहास पर नजर डालें तो यह स्पष्ट होता है कि धार्मिक और सामाजिक आंदोलनों ने राष्ट्रवाद की नींव को गहराई दी। आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन और देवबंद आंदोलन जैसे संगठनों ने अपने-अपने ढंग से राष्ट्रवादी चेतना को पोषित किया। (ओमवेट, 1976)। इसी क्रम में गोरखपीठ और नाथ संप्रदाय ने भी अपनी विचारधारा और सक्रियता से राष्ट्रवाद को एक विशिष्ट हिन्दू सांस्कृतिक आधार प्रदान किया। महंत दिग्विजयनाथ, महंत अवेद्यनाथ और बाद में महंत आदित्यनाथ जैसे नेता केवल धार्मिक व्यक्तित्व नहीं रहे, बल्कि राष्ट्रवादी राजनीति के सशक्त स्तंभ भी बने। डॉ. दिनेश सिंह सारथी लिखते है की महंथ दिग्विजयनाथ हिन्दू और हिन्दू राष्ट्रवाद के एक निर्भीक और सशक्त प्रहरी थे। यहाँ तक की वे देश की संसद में भी इस बात को उठाया करते थे क्योंकि उनका मानना था की जो हिन्दी, हिन्दू और हिन्दुस्तान के विरूद्ध है, वह देश द्रोही है चाहे वह किसी भी वर्ग का क्यों ना हो? (सारथी,

2017) महंत अवेद्यनाथ ने भी इस परंपरा को आगे बढ़ाते हुए सामाजिक और राजनीतिक आंदोलनों में सक्रियता दिखाई। नाथ संप्रदाय का यह स्वरूप इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि धार्मिक परंपराएँ केवल आध्यात्मिक साधना तक सीमित नहीं थीं, बल्कि वे राष्ट्र निर्माण की ठोस प्रक्रिया में भागीदार बनीं। (जाफरलोट,1996)

नाथ संप्रदाय के गोरखपीठ, गोरखपुर का राष्ट्रवादी विमर्श केवल राजनीति तक सीमित नहीं था। इसमें सामाजिक समरसता का भी गहरा तत्व था। मध्यकालीन संत परंपरा की तरह नाथ योगियों ने जातिगत भेदभाव को अस्वीकार किया और समानता की बात की। (शुक्ल, 1949) गोरखपीठ से जुड़े महंतों ने आधुनिक काल में इस परंपरा को आगे बढ़ाते हुए शिक्षा, स्वास्थ्य और समाजसेवा के कार्य किए। इस प्रकार राष्ट्रवाद को उन्होंने सामाजिक आधार भी दिया, जो केवल सत्ता प्राप्ति का साधन नहीं था, बल्कि समाज में सुधार और एकता का भी माध्यम था।

इस अध्ययन की शोध समस्या यह है कि नाथ संप्रदाय को प्रायः केवल एक धार्मिक-योग परंपरा के रूप में देखा जाता है, जबकि उसके राष्ट्रवादी स्वरूप पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया है। बहुत से शोध धर्म, दर्शन और योग की दृष्टि से नाथ परंपरा का मूल्यांकन करते हैं, परंतु उसके राष्ट्रवादी विमर्श का व्यवस्थित अध्ययन अपेक्षाकृत कम हुआ है। (जाफरलोट,1996)। अतः इस शोध का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में नाथ संप्रदाय के गोरखपीठ, गोरखपुर ने राष्ट्रवादी आंदोलन को किस प्रकार प्रभावित किया और उसके माध्यम से सामाजिक समरसता और राजनीतिक जागरण की प्रक्रिया को किस तरह गति दी।

इस शोध का एक अन्य उद्देश्य नाथ संप्रदाय के राष्ट्रवादी विमर्श की तुलना अन्य संप्रदायों से करना भी है। उदाहरणस्वरूप, आर्य समाज ने जहां शिक्षा और सामाजिक सुधार के माध्यम से राष्ट्रवाद को पोषित किया, वहीं नाथ संप्रदाय ने धार्मिक-सांस्कृतिक चेतना और मठ परंपरा के माध्यम से उसे दिशा दी। इस प्रकार, यह विमर्श बहुआयामी है और भारत के राष्ट्रवादी आंदोलन की जटिलता को समझने में सहायक है (ओमवेट,1976)।

संक्षेप में, नाथ संप्रदाय के गोरखपीठ, गोरखपुर का राष्ट्रवादी विमर्श भारत की राष्ट्र निर्माण प्रक्रिया में एक विशिष्ट योगदान है। इसने धार्मिक परंपरा, सामाजिक सुधार और राजनीतिक सक्रियता को एक साथ जोड़ते हुए राष्ट्रवाद को नया आधार प्रदान किया। अतः इस विषय पर शोध न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि समकालीन भारतीय समाज और राजनीति की समझ के लिए भी आवश्यक है।

शोध की कार्यप्रणाली

यह अध्ययन गुणात्मक और ऐतिहासिक पद्धति पर आधारित है, जिसमें अभिलेखीय स्रोत, भाषण, समाचार-पत्र और द्वितीयक साहित्य का विश्लेषण किया गया है।

साहित्य समीक्षा

नाथ संप्रदाय पर शोध की परंपरा अपेक्षाकृत समृद्ध रही है, परंतु इसका अधिकांश भाग धार्मिक, दार्शनिक और योग संबंधी पहलुओं तक सीमित है। राष्ट्रवादी विमर्श के संदर्भ में व्यवस्थित अध्ययन अपेक्षाकृत कम दिखाई देता है। इस समीक्षा का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि अब तक किए गए अध्ययनों ने नाथ संप्रदाय और उसके राष्ट्रवादी स्वरूप को किस प्रकार प्रस्तुत किया है, और कहाँ पर शोध का अभाव है।

1. ऐतिहासिक और धार्मिक परिप्रेक्ष्य में नाथ संप्रदाय

नाथ संप्रदाय के इतिहास और दर्शन पर आरंभिक व प्रमुख कार्य का हजारी प्रसाद द्विवेदी का नाथ संप्रदाय है। इसमें गोरखनाथ की शिक्षाओं, हठयोग की परंपरा और सामाजिक चेतना का विश्लेषण किया गया है। गोरखनाथ और नाथ योगियों ने मध्यकालीन समाज में जाति-आधारित भेदभाव को चुनौती दी और व्यापक जनचेतना का निर्माण किया। यद्यपि यह कृति ऐतिहासिक दृष्टि से मूल्यवान है, किंतु इसमें आधुनिक काल के राष्ट्रवादी विमर्श पर सीधा प्रकाश नहीं डाला गया।

इसी प्रकार रामचंद्र शुक्ल ने हिन्दी साहित्य का इतिहास में मध्यकालीन संत परंपरा का अध्ययन करते हुए नाथ योगियों को भक्ति आंदोलन और सामाजिक सुधार के संदर्भ में रखा। नाथ पंथ ने लोकजीवन में आध्यात्मिकता और सामाजिक समानता को एक साथ प्रस्तुत किया। परंतु राष्ट्रवादी आंदोलनों में इस परंपरा के योगदान पर उन्होंने विशेष चर्चा नहीं की।

2. आधुनिक काल और गोरखपीठ, गोरखपुर की भूमिका

नाथ संप्रदाय के आधुनिक स्वरूप को समझने के लिए गोरखपीठ, गोरखपुर से जुड़े महंतों की भूमिका का अध्ययन आवश्यक है। दिनेश सिंह सारथी महंत दिग्विजयनाथ जी का सामाजिक और राजनीतिक विचार इस दिशा में महत्वपूर्ण कृति है। इसमें दिग्विजयनाथ की राष्ट्रवादी सक्रियता, हिंदू महासभा से उनका जुड़ाव और स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भागीदारी का विवरण है। सारथि यह मानते हैं कि दिग्विजयनाथ ने गोरखपीठ को केवल धार्मिक संस्था न रखकर राजनीतिक और सामाजिक आंदोलनों का भी केंद्र बना दिया। हालांकि यह पुस्तक महंत दिग्विजयनाथ पर केंद्रित है और व्यापक नाथ संप्रदाय की भूमिका का समग्र मूल्यांकन इसमें नहीं मिलता।

महंत अवेद्यनाथ और आदित्यनाथ पर भी कुछ शोध उपलब्ध हैं, लेकिन अधिकांशतः वे जीवनीपरक या प्रशस्तिपरक शैली में लिखे गए हैं। इनसे यह संकेत तो मिलता है कि गोरखपीठ ने उत्तर भारत में राष्ट्रवादी विमर्श को निरंतरता दी, परंतु अकादमिक स्तर पर गहन विश्लेषण की अभी भी कमी है।

3. राष्ट्रवाद और धार्मिक आंदोलनों का सामान्य साहित्य

भारत में राष्ट्रवाद और धार्मिक आंदोलनों के संबंध पर कई विद्वानों ने काम किया है। क्रिस्टोफ़ जाफरलोट की कृति 'द हिन्दू नेशनलिस्ट मूवमेंट इन इंडिया' हिन्दू राष्ट्रवाद की ऐतिहासिक यात्रा का विश्लेषण करती है। इसमें गोरखपीठ और उत्तर भारत की महंत परंपरा का उल्लेख मिलता है, परंतु यह उल्लेख व्यापक परिप्रेक्ष्य में है,न कि नाथ संप्रदाय के विशिष्ट विमर्श पर। (जाफरलोट,1996)

इसी प्रकार गेल ओमवेट की कल्चरल रिवोल्ट इन अ कोलोनियल सोसाइटी ने यह दिखाया कि औपनिवेशिक भारत में सामाजिक व धार्मिक आंदोलनों ने राष्ट्रवादी संघर्ष को सांस्कृतिक आधार प्रदान किया। हालांकि ओमवेट का अध्ययन महाराष्ट्र और दक्षिण भारत पर अधिक केंद्रित है, लेकिन उनका सैद्धांतिक ढाँचा नाथ संप्रदाय की राष्ट्रवादी भूमिका को समझने में भी सहायक हो सकता है।

4. शोध का अभाव और संभावनाएँ

इन अध्ययनों के आधार पर यह स्पष्ट है कि नाथ संप्रदाय को अब तक मुख्यतः धार्मिक-दार्शनिक परंपरा के रूप में देखा गया है। गोरखपीठ से जुड़े महंतों की राजनीतिक भूमिका पर कुछ कार्य अवश्य हुए हैं। (सारथी, 2017) किंतु उन्हें व्यापक राष्ट्रवादी विमर्श और सामाजिक समरसता के संदर्भ में व्यवस्थित रूप से नहीं देखा गया। यह भी उल्लेखनीय है कि नाथ संप्रदाय का राष्ट्रवादी स्वरूप केवल राजनीतिक सक्रियता तक सीमित नहीं था, बल्कि इसमें सामाजिक समरसता, जाति-विरोध और शिक्षा-प्रसार की गतिविधियाँ भी शामिल थीं। वर्तमान शोध इस कमी को पूरा करने का प्रयास करेगा और नाथ संप्रदाय के राष्ट्रवादी विमर्श को उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में व्यवस्थित रूप से विश्लेषित करेगा।

विश्लेषण और चर्चा

नाथ संप्रदाय का ऐतिहासिक स्वरूप केवल योग और साधना तक सीमित नहीं रहा है। यह एक ऐसी परंपरा है जिसने समाज को संगठन, सांस्कृतिक पहचान और राजनीतिक चेतना प्रदान की। उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में जब भारतीय राष्ट्रवाद आकार ले रहा था, तब नाथ संप्रदाय, विशेषकर गोरखपीठ, राष्ट्रवादी विमर्श का एक महत्त्वपूर्ण केंद्र बना। इस खंड में नाथ संप्रदाय के राष्ट्रवादी विमर्श का विश्लेषण तीन प्रमुख स्तरों पर किया गया है— (1) ऐतिहासिक राष्ट्रवादी दृष्टिकोण, (2) गोरखपीठ और महंतों की राजनीतिक भूमिका, तथा (3) सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक विमर्श।

1. ऐतिहासिक राष्ट्रवादी दृष्टिकोण

नाथ संप्रदाय की जड़ें मध्यकालीन भारत में गोरखनाथ और उनके अनुयायियों से जुड़ी हैं। गोरखनाथ ने योग और हठयोग की परंपरा को जनमानस तक पहुँचाया और जाति-आधारित

विभाजनों का विरोध किया । इस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि ने संप्रदाय को ऐसी सामाजिक चेतना दी, जो आगे चलकर आधुनिक राष्ट्रवाद के लिए आधार बनी।

उन्नीसवीं शताब्दी में ब्रिटिश उपनिवेशवाद के दौरान नाथ संप्रदाय के मठ केवल धार्मिक स्थल नहीं रहे, बल्कि वे जनता के लिए आश्रय और संगठन के केंद्र बने। राष्ट्रवादी नेताओं ने जनता को संगठित करने के लिए ऐसे धार्मिक-सांस्कृतिक केंद्रों का सहारा लिया। यह प्रवृत्ति अन्य संप्रदायों में भी दिखती है, जैसे आर्य समाज ने शिक्षा और सुधार आंदोलनों को गति दी (ओमवेट, 1976)। किंतु नाथ संप्रदाय की विशिष्टता यह रही कि उसने धर्म, योग और सांस्कृतिक परंपरा को राजनीतिक चेतना से सीधे जोड़ा।

2. गोरखपीठ और महंतों की राजनीतिक भूमिका

(क) महंत दिग्विजयनाथ

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में गोरखपीठ के महंत दिग्विजयनाथ ने नाथ संप्रदाय की राजनीतिक भूमिका को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया। वे स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रहे और हिंदू महासभा से जुड़े। 1930-40 के दशक में उनके नेतृत्व में गोरखपुर और आसपास के क्षेत्रों में राष्ट्रवादी सभाएँ और आंदोलन आयोजित हुए। (सारथी, 2017)

दिग्विजयनाथ का राष्ट्रवादी विमर्श दो स्तरों पर महत्वपूर्ण था—

1. **राजनीतिक** : उन्होंने हिंदू महासभा के मंच से अंग्रेज़ी शासन का विरोध किया और हिंदू एकता का नारा दिया ।

2. **सांस्कृतिक** : उन्होंने धार्मिक आयोजनों, विशेषकर रामलीला और काव्य सम्मेलनों को राष्ट्रवादी प्रचार का माध्यम बनाया।

उनकी भूमिका ने यह सिद्ध किया कि धार्मिक नेता केवल आध्यात्मिक मार्गदर्शक ही नहीं, बल्कि राजनीतिक चेतना के वाहक भी हो सकते हैं।

(ख) महंत अवेद्यनाथ

महंत अवेद्यनाथ ने स्वतंत्रता पश्चात काल में इस परंपरा को आगे बढ़ाया। वे संसद सदस्य बने और सामाजिक-राजनीतिक आंदोलनों में सक्रिय रहे। उनका राष्ट्रवादी विमर्श शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार पर भी केंद्रित था। उन्होंने विद्यालयों और चिकित्सालयों की स्थापना में योगदान दिया, जिससे राष्ट्रवाद का सामाजिक पक्ष सशक्त हुआ ।

(ग) महंत आदित्यनाथ

वर्तमान समय में महंत योगी आदित्यनाथ ने नाथ संप्रदाय के राष्ट्रवादी विमर्श को समकालीन राजनीति तक पहुँचाया। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बनने के बाद उन्होंने "सांस्कृतिक राष्ट्रवाद" को

प्रशासनिक और विकासात्मक विमर्श से जोड़ा । उनका योगदान इस अध्ययन के कालखण्ड से बाहर है, लेकिन यह दिखाता है कि नाथ संप्रदाय की राष्ट्रवादी परंपरा निरंतरता बनाए हुए है।

3. सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक विमर्श

नाथ संप्रदाय का राष्ट्रवाद केवल राजनीतिक गतिविधियों तक सीमित नहीं था। इसकी जड़ें सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में गहरी थीं।

i. **जातिवाद विरोध और समानता**

गोरखनाथ और उनके अनुयायियों ने मध्यकाल में ही जातिगत विभाजन का विरोध किया और यह विचार आगे आधुनिक राष्ट्रवाद की सामाजिक आधारशिला बना| (शुक्ल, 1949)

ii. **शिक्षा और जनजागरण**

महंतों ने विद्यालयों और महाविद्यालयों की स्थापना की, जिससे ग्रामीण और पिछड़े वर्गों को शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला। यह राष्ट्रवाद का एक व्यावहारिक रूप था, जो केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित न होकर सामाजिक सशक्तिकरण की ओर भी उन्मुख था। (श्री गोरखनाथ मंदिर और गोरखपुर का इतिहास, 2017)

iii. **सांस्कृतिक राष्ट्रवाद**

नाथ संप्रदाय ने धार्मिक उत्सवों और सांस्कृतिक आयोजनों को राष्ट्रवादी प्रचार का साधन बनाया। उदाहरण के लिए, गोरखपुर की रामलीला में राजनीतिक संदेशों को सांस्कृतिक रूप में प्रस्तुत किया गया। इससे राष्ट्रवाद को व्यापक जनसमर्थन प्राप्त हुआ। (श्री गोरखनाथ मंदिर और गोरखपुर का इतिहास, 2017)

तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य

नाथ संप्रदाय का राष्ट्रवादी विमर्श अन्य संप्रदायों से कुछ मायनों में भिन्न था।

- **आर्य समाज** ने शिक्षा और सामाजिक सुधार पर बल दिया, लेकिन उसका आधार वैदिक पुनरुद्धारवाद था।
- **रामकृष्ण मिशन** ने सेवा और आध्यात्मिकता के माध्यम से राष्ट्रवाद को पोषित किया।
- **नाथ संप्रदाय** ने योग, धर्म और सांस्कृतिक आयोजनों को सीधे राजनीतिक चेतना से जोड़ा और महंतों को सक्रिय राजनीतिक नेतृत्वकर्ता के रूप में स्थापित किया (ओमवेट, 1976)।

इस तुलना से स्पष्ट होता है कि नाथ संप्रदाय का राष्ट्रवादी विमर्श अधिक प्रत्यक्ष और संगठित था। इस खंड के विश्लेषण से तीन प्रमुख निष्कर्ष सामने आते है

1. **योग और परंपरा से राष्ट्रवाद तक** : नाथ संप्रदाय की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि ने उसे एक ऐसी वैचारिक भूमि दी, जिससे आधुनिक राष्ट्रवाद को आधार मिला।
2. **महंतों की केंद्रीय भूमिका** : दिग्विजयनाथ और अवेद्यनाथ जैसे महंतों ने धार्मिक परंपरा को राजनीतिक आंदोलन से जोड़ा और उत्तर भारत की राजनीति में स्थायी प्रभाव छोड़ा।
3. **सामाजिक-सांस्कृतिक योगदान** : शिक्षा, स्वास्थ्य और सांस्कृतिक आयोजनों के माध्यम से गोरक्ष पीठ ने राष्ट्रवाद को केवल सत्ता संघर्ष न रखकर सामाजिक सुधार और सांस्कृतिक पुनरुत्थान से भी जोड़ा।

निष्कर्ष

भारत के राष्ट्रवादी आंदोलन को समझने के लिए केवल राजनीतिक इतिहास का अध्ययन पर्याप्त नहीं है। यह आंदोलन सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक परंपराओं से गहराई से जुड़ा रहा। इस परिप्रेक्ष्य में नाथ संप्रदाय का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि धार्मिक संस्थाएँ और मठ राष्ट्रवाद की प्रक्रिया में केवल परोक्ष नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष भूमिका निभाती रही हैं।

इस शोध से यह सिद्ध हुआ कि नाथ संप्रदाय, विशेषकर गोरखपीठ, राष्ट्रवादी विमर्श का एक सशक्त केंद्र था। ऐतिहासिक स्तर पर गोरखनाथ और नाथ योगियों ने जातिगत समानता और लोक आधारित आध्यात्मिकता को बढ़ावा दिया । यह दृष्टिकोण आगे चलकर सामाजिक समरसता और राष्ट्रवाद की पृष्ठभूमि बना। राजनीतिक स्तर पर महंत दिग्विजयनाथ और महंत अवेद्यनाथ जैसे नेताओं ने धार्मिक परंपरा को राजनीतिक संघर्ष से जोड़ा और स्वतंत्रता संग्राम तथा स्वतंत्रता-उपरांत भारतीय राजनीति में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। सांस्कृतिक स्तर पर गोरखपीठ ने उत्सवों, विजयादशमी, रामलीला और धार्मिक आयोजनों के माध्यम से राष्ट्रवाद को जनसाधारण तक पहुँचाया।

इस प्रकार नाथ संप्रदाय के गोरक्ष पीठ का राष्ट्रवाद केवल सत्ता परिवर्तन का साधन नहीं था, बल्कि यह सामाजिक समरसता, शिक्षा और सांस्कृतिक पुनरुत्थान पर आधारित एक व्यापक परियोजना थी। नाथ संप्रदाय का अध्ययन यह दिखाता है कि भारत में राष्ट्रवाद एक बहुआयामी प्रक्रिया थी, जिसमें धर्म, संस्कृति और राजनीति का समन्वय था। गोरखपीठ और उसके महंतों ने इस समन्वय को ठोस रूप दिया और राष्ट्रवाद को केवल राजनैतिक आंदोलन से अधिक, एक सामाजिक-सांस्कृतिक पुनरुत्थान में परिवर्तित किया। इस प्रकार, यह शोध न केवल नाथ संप्रदाय के गोरखपीठ, गोरखपुर की राष्ट्रवादी भूमिका को रेखांकित करता है, बल्कि भारतीय राष्ट्रवाद की उस व्यापक परंपरा को भी उजागर करता है जो धार्मिक संस्थाओं और संप्रदायों की सक्रिय भागीदारी से निर्मित हुई है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. राघव, रांगेय.(2024). गोरखनाथ और उनका युग, अनन्य प्रकाशन, नई दिल्ली.

2. द्विवेदी, हजारी प्रसाद.(2019). नाथ संप्रदाय. लोकभारती, प्रयागराज.

3. सारथी, दिनेश सिंह.(2017). महंथ दिग्विजयनाथ जी का सामाजिक और राजनीतिक विचार. अर्चना पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूशन, नई दिल्ली.

4. शुक्ल, रामचंद्र. (1949). हिन्दी साहित्य का इतिहास, पाँचवाँ संस्करण. नागरी प्रचारिणी सभा, काशी.

5. श्री गोरखनाथ मंदिर और गोरखपुर का इतिहास. (2017), गोरखनाथ मंदिर, गोरखपुर.

6. Briggs, W. G. (2007). Gorakhnath and the Kanphata Yogis, Motilal Banarasidass Publishers Private Limited,Delhi.

7. Jaffrelot, C. (1996).The Hindu Nationalist Movement in India. Columbia University Press, New York.

8. Omvedt, G. (1976). Cultural Revolt in a Colonial Society, Scientific Socialist Education Trust, Bombay.

Copyright © 2026 Author(s). Published by Siri Research Foundation. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution International License (CC BY 4.0).